जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान जगत के ज्ञाता-दृष्टा हैं, कर्त्ता-धर्त्ता नहीं। जो जगत को साक्षीभाव से अप्रभावित रहकर देख सकें; वस्तुत: वही भगवान है।

ह्न आप कुछ भी कहो, पृष्ठ - 14

वर्ष : 27, अंक : 20 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

बाल संस्कार शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. दिल्ली : श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा आत्मसाधना केन्द्र, दिल्ली में होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की पूर्व बेला में बाल संस्कार शिविर दिनांक 26 दिसम्बर, 2004 से 02 जनवरी, 2005 तक सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में दिल्ली एवं उत्तरप्रदेश के 13 स्थानों पर कक्षाओं, प्रवचनों एवं आकर्षक कार्यक्रमों द्वारा लगभग 1200 बच्चों एवं 900 प्रौढों ने धर्मलाभ प्राप्त किया।

शिविर में दिल्ली महानगर के **कैलाशनगर** में पं. राहुल शास्त्री एवं पं. किशोर शास्त्री, **सीताराम बाजार** में पं. निखिल शास्त्री, **उस्मानपुर** में पं. गुलाबचन्दजी बीना एवं पं. अनुज शास्त्री, **शास्त्रीनगर** में पं. अर्पित शास्त्री तथा **शंकरनगर** में पं. प्रशान्त शास्त्री द्वारा धर्मप्रभावना की गई। इसी क्रम में उत्तरप्रदेश के **मेरठ शहर** में पं. जितेन्द्र शास्त्री एवं पं. आशीष शास्त्री, **खतौली** में पं. धीरज शास्त्री एवं पं. अतुल शास्त्री, **मुजफ्फरनगर** में पं. रोहन शास्त्री एवं पं. मुकुन्द शास्त्री, **कुरावली** में पं. प्रमेश शास्त्री, **खेकड़ा** में पं. अंकुर शास्त्री एवं पं. एलमचन्द शास्त्री, **बड़ौत** में पं. निपुण शास्त्री एवं पं. रमेश शास्त्री, **भोगाँव** में पं. अरहंत शास्त्री तथा **गंगेरू** में पं. अभय शास्त्री द्वारा तत्त्वप्रचार किया गया।

शिविर का संचालन पं. संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, पं. नागेशजी पिड़ावा, पं. संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पं.सुरेन्द्रजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पं. सचिनजी शास्त्री बरेली द्वारा किया गया।

शिविर का पुरस्कार वितरण 9 जनवरी को श्री दिनेश जैन, समता टाइम्स के करकमलों से हुआ।

2. सेमारी (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन पण्डित सुनीलकुमारजी नाके, निम्बाहेड़ा द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में आपके द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली गई; जिसका लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित सतीशजी शास्त्री द्वारा दोनों समय बालकक्षा ली गई तथा रात्रि में विभिन्न कार्यक्रम कराये गये। दिनांक 31 दिसम्बर को जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई।

विधान एवं उद्घाटन समारोह सम्पन्न

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ श्री सीमन्धर स्वामी दि. जैन मन्दिर पालडी में दिनांक 10 से 12 दिसम्बर, 2004 तक सीमन्धर पंचकल्याणक विधान एवं यागमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर श्री सीमन्धर स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री चुन्नीलाल जीवनलाल परिवार द्वारा, श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री जयंतिलाल चुन्नीलाल दोशी परिवार द्वारा, श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला भवन का उद्घाटन श्रीमती कमलाबेन चुन्नीलाल दामाणी परिवार द्वारा तथा 12 फीट के स्वर्णपुरी (सोनगढ़) दर्शन के भव्य चित्र का उद्घाटन श्री निमेषभाई शांतिलाल शाह परिवार द्वारा हुआ।

शिक्षण-शिविर सम्पन्न

सिद्धायतन (द्रोणगिरि-म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक 25 से 31 दिसम्बर, 2004 तक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी द्वारा समयसार पर, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन एवं लघु जैन सि. प्रवेशिका पर मार्मिक प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई। इसके अतिरिक्त पण्डित महेन्द्रजी बरायठा एवं पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर का भी लाभ उपस्थित साधर्मियों को प्राप्त हुआ।

शिविर के मध्य लघुतत्त्वस्फोट पर विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अतिथि विश्राम गृह का शिलान्यास श्रीमान सेठ गुलाबचन्दजी जैन, सागर ने किया।

शिविर में 47 शक्ति विधान का आयोजन हुआ। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, बांसवाड़ा ने कराये।

प्रतिदिन रात्रि में समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में वासन्तीबेन मुम्बई, श्री शगुनचन्द मानोरिया एवं श्रीमंत सेठ डालचन्द जैन सागर उपस्थित थे।

ह्न पीयूष जैन

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6:45 बजे अवश्य सुनें।

साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 09312506419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

दिल्ली पंचकल्याणक की पत्रिका

दिल्ली पंचकल्याणक की पत्रिका

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

22 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–३५

जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सव्वहा तस्स।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा ।।३५।।

(हरिगीत)

जीवित नहीं जड़ प्राण से पर चेतना से जीव हैं।
जो वचन गोचर हैं नहीं वे देह विरहित सिद्ध हैं।।

पिछली ३४वीं गाथा में कहा गया है कि ह्न यद्यपि आत्मा और देह संसार अवस्था में दूध और पानी की भाँति एक क्षेत्रावगाही ही हैं; तथापि स्वभाव से दोनों एक नहीं हैं।

संसारी जीव अध्यवसान अर्थात् राग–द्वेष–मोहरूप वर्तता हुआ संसार में परिभ्रमण करता है।

अब प्रस्तुत पैंतीसवीं गाथा में सिद्धों का स्वरूप कहा जा रहा है। इसमें आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि सिद्धजीवों के दसों अचेतन द्रव्य प्राणों का अभाव हो जाने से अब प्राण धारण रूप जीवत्व नहीं है तथा ज्ञान–दर्शनरूप चेतन प्राण होने से जीवत्व का अभाव भी नहीं है। सिद्ध भगवन्त ऐसे देहरहित वचन अगोचर अनंत महिमावंत हैं।

इसी बात को स्पष्ट करते हुए टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि यह सिद्धों के जीवत्व और देहप्रमाणत्व की व्यवस्था है।

सिद्धों को वास्तव में द्रव्यप्राण के धारणरूप जीवस्वभाव मुख्यरूप से नहीं हैं; किन्तु उन्हें जीवत्व भाव का सर्वथा अभाव भी नहीं है; क्योंकि भावप्राण के धारण स्वरूप जीवस्वभाव का मुख्यरूप से सद्भाव है और उन्हें शरीर के साथ नीर–क्षीर की भाँति एकरूप वृत्ति नहीं है; क्योंकि शरीर संयोग से के हेतुभूत कषाय और योग का वियोग हुआ है, इसलिए वे अन्तिम शरीरप्रमाण अवगाहरूप परिणत होने पर भी अत्यन्त देहरहित हैं।

ऐसे सिद्ध भगवन्त वचनगोचरातीत महिमावंत हैं; क्योंकि लौकिक द्रव्यप्राण के धारण बिना और शरीर के संबंध बिना अपने निरुपाधि स्वरूप से सतत् प्रतापवंत हैं।

जयसेनाचार्य बौद्धमतानुयायी शिष्य की शंका का समाधान करते हुए कहते हैं कि वहाँ सिद्धदशा में जीव का सर्वथा अभाव नहीं हुआ है; क्योंकि सिद्ध शुद्ध सत्ता सहित चैतन्य ज्ञानादिरूप शुद्ध भावप्राण सहित हैं, इसकारण सिद्धावस्था में जीव का सर्वथा अभाव नहीं है। वे द्रव्य–भावप्राणों से रहित होने पर भी चैतन्य प्राणों से प्रतापवान हैं।

कवि हीरानंद अपनी काव्यशैली में कहते हैं कि द्रव्यप्राणों के बिना भी चैतन्य प्राणों से सिद्ध भगवन्तों का अस्तित्व है। वे अनन्त महिमावंत और सुखी हैं।

(दोहा)

जिनकै जीव सुभाव हैं, नहिं अभाव कहि होइ।
भिन्न देहतैं सिद्ध हैं, कहि करि सकै न कोइ।।१९२।।

(सवैया)

सत्ता–सुख–ग्यान–दृष्टि चारौं सुद्ध भाव–प्रान,
सिद्ध सदैव यातैं जीवता सुहाई है।।
कारन कषाय–जोग सिद्धविषैं नास तातैं,
देहसौं अतीत देहगाहना रहाई है।।
लोक–प्रान देह नाहीं सुद्ध–प्रान गाह माहीं,
निरुपाधिरूप सोई प्रभुता दिखाई है।।
महिमा अनंत ताकी वचनकै अंत थाकी,
भाव–श्रुत–सार जाकी रचना बनाई है।।१९३।।

(दोहा)

सिद्ध सिद्धगतिमैं लसैं, करि निषिद्ध परभाव।
देहमात्र अवगाहना, सुद्ध सरूप बढ़ाव।।१९४।।

उपर्युक्त छन्दों में कवि कहते हैं कि सिद्धों के अनादि का वह ज्ञायक जीवस्वभाव है, जिसका कभी अन्त नहीं होता। वे देह और विभाव भावों से भिन्न हैं तथा उनकी महिमा का कथन वचनातीत है।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी कहते हैं कि इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने सिद्धजीवों का स्वभाव तथा उन्हें अन्तिम देह से किंचित् न्यून कहा है। गुरुदेव कहते हैं कि सिद्ध भगवंतों को परमानन्ददशा का अनुभव होता है। यद्यपि उनको पाँच इन्द्रियाँ मन–वचन–काय श्वांस और आयु ह्न ऐसे दस प्राण नहीं होते, तथापि उनके सत्ता, सुख, चैतन्य और ज्ञानरूप प्राण होते हैं। वे इनके कारण सिद्धदशा प्राप्त होने के बाद सदा से जीवित हैं और अनन्तकाल जीवित रहेंगे।

आगे कहा कि जैसे निगोद के जीव जीवास्तिकाय हैं, वैसे ही सिद्ध भी जीवास्तिकाय हैं। भले पर्याय में अन्तर है; परन्तु जीवास्तिकाय वैसा ही है, उसमें कोई अन्तर नहीं हुआ।

सिद्धान्त में दो तरह के प्राण कहे ह्न एक निश्चय और दूसरे व्यवहार। उनमें शुद्ध सत्ता, शुद्ध सुख, चैतन्य और ज्ञान में ये निश्चय प्राण हैं तथा अशुद्ध इन्द्रियादि एवं बल इत्यादि व्यवहार प्राण हैं। इसकारण सिद्धों को कथंचित् प्राण है और कथंचित् नहीं है ह्न ऐसा अनेकान्त समझना। उनके निश्चय प्राण है और व्यवहार प्राण नहीं है। उनके अशुद्ध बिल्कुल भी नहीं है।

इसप्रकार इस गाथा में सिद्ध के स्वरूप और उनकी महिमा बताई है।

कुछ लोग कहते हैं कि हमें मोक्ष में भी नहीं जाना है, हमें तो कोई ऐसा रास्ता बताओ, जिससे इस संसार में रहते हुये ही सुखी हो जावें। पर भाई, ऐसा रास्ता है ही नहीं, तो क्या बताया जाये ? यदि संसार में सुख होता तो तीर्थंकरादि बड़े लोग इस संसार को क्यों छोड़ते।

– आत्मा ही है शरण, पृष्ठ–32

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 20

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

प्रथम उदाहरण में, पहले एक गड्ढा बना दिया जाता था और उसके ऊपर घास डाल दिया जाता था। उस गड्ढे के उदाहरण से आचार्य ने मोह को समझाया है।

दूसरे उदाहरण में, हथिनी को ऐसा प्रशिक्षित किया जाता था कि वह हाथी को फँसाकर उसे अपने पीछे दौड़ाती थी। इसप्रकार के हाथी के माध्यम से यहाँ राग को समझाया है।

तीसरे उदाहरण में, हाथी को ऐसा प्रशिक्षित किया जाता था कि वह सामनेवाले हाथी को ललकारता था। तब वह दूसरा हाथी उससे लड़ने के लिए आता था। जब वह लड़ने के लिए आता था, तब वह उस गड्ढे में गिर जाता था।

द्वितीय उदाहरण में हथिनी राग में फँसाकर हाथी को गड्ढे में गिराती है और इस उदाहरण में द्वेष में फँसाकर हाथी को गड्ढे में गिराया जाता है।

'घास के ढेर से ढके हुए खड्डे को प्राप्त होनेवाले हाथी की भाँति' ह्न यह मोह (अज्ञान) संबंधी उदाहरण है। 'हथिनीरूपी कुट्टनी के शरीर में आसक्त हाथी की भाँति' ह्न यह राग संबंधी उदाहरण है और 'विरोधी हाथी को देखकर, उत्तेजित होकर (उसकी ओर) दौड़ते हुए हाथी की भाँति' ह्न द्वेष संबंधी उदाहरण है।

यहाँ तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं ह्न धोखा खाकर मोह में पड़े और अपनापन स्थापित कर लें अथवा राग करे अथवा द्वेष करे; परन्तु ये तीनों चीजे फँसाती ही हैं।

अरे ! आप भी खण्डेलवाल और मैं भी खण्डेलवाल। आप भी छाबड़ा मैं भी छाबड़ा ह्न इसप्रकार अपनेपन में फँसाना, यह मोह का ही उदाहरण है। किसीप्रकार अपनापन स्थापित करना ह्न यह प्रत्येक की वृत्ति है। यदि परदेश में उसे कोई जापानी मिलता है और उससे इसकी कोई रिश्तेदारी नहीं है। वह किसी भी रूप में उससे जुड़ा हुआ नहीं है। फिर भी जापान एशिया में है, इसलिए हम भी एशियन और तुम भी एशियन ह्न इसप्रकार उसमें कहीं न कहीं से अपनत्व स्थापित करता है। यह अपनापन जोड़ने की वृत्ति ही मिथ्यात्व है। अपनापन जोड़ना फँसने और फँसाने की वृत्ति है।

इसीप्रकार जहाँ भी थोड़ा-सा संयोग मिलता हुआ दिखता है, वहाँ यह तुरंत अपनापन जोड़ लेता है। आप भी मुमुक्षु, मैं भी मुमुक्षु , आप दिगम्बर, मैं भी दिगम्बर ह्न इसप्रकार सम्प्रदाय से अपनत्व जोड़ता है। आप जैनी, मैं भी जैनी ह्न इसप्रकार जाति से, गोत्र से ह्न ऐसे विविधप्रकार से यह अपनत्व जोड़ने का प्रयत्न करता है।

जिससे समानता दिखें और जहाँ एकता उत्पन्न हो, राग का कारण दिखे, वहाँ तुरंत राग उत्पन्न होता है। उस राग का कारण एकत्व व मोह ही है।

यह स्वयं अमरीकन है और दूसरा एशियन है, उसमें कोई अपनत्व का बिन्दु भी नहीं है, फिर वह अच्छा आदमी है ह्न इसप्रकार उसकी अच्छाइयाँ बताकर उसमें राग पैदा करता है। यदि उस व्यक्ति को पछाड़ना है, तब उसके विरोधी का साथ देना ही पड़ेगा। इस उद्देश्य से जैसे पाकिस्तान विरोधी है, पर चाइना से निपटना है; तब विरोधी का विरोधी दोस्त हो जाता है ह्न ऐसे सिद्धान्त निकालकर उससे मोह, राग व द्वेष ह्न इन तीनों को पुष्ट करता है। सम्पूर्ण जगत मोह, राग और द्वेष ह्न इन तीनों में ही फँसता-फँसाता आ रहा है।

मोह, राग और द्वेष इन तीनों का उदाहरण देकर आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि ये तीनों अनिष्ट कार्य करनेवाले हैं; इसलिए मोह, राग व द्वेष ह्न इन तीनों का यथावत् निर्मूल नाश हो; हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। ८१वीं गाथा तक आचार्य ने मोह, राग और द्वेष के नाश का उपाय बताया। ८२वीं गाथा में यह प्रेरणा दी कि करनेयोग्य कार्य मात्र यही है; अब और अधिक खोजा-खोजी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। खोजने का कार्य सिद्ध हो गया है। अब मात्र पुरुषार्थ प्रारम्भ करना शेष है।

और जरा देख लें, और जरा देख लें ह्न ऐसा अतृप्ति का भाव शेष रहना ही नहीं चाहिए। अब निर्णय हो गया है और समय अल्प है; अत: पुरुषार्थ प्रारम्भ करो।

दुकान पर जाते हैं, सब निर्णय हो जाते हैं; तब ऐसा ही कहा जाता है कि अब खरीदो और भागो। कपड़ा खरीद लिया है, दर्जी के यहाँ कपड़ा सिलने डाल दिया है। दर्जी ने उसे काट दिया है; इतना सबकुछ होने पर भी यदि वह कहता है कि कहीं अपन ठगाए तो नहीं गए ? थोड़ा दो दुकानें और देख लें। ऐसे मूर्खों के लिए हम यही समझाते हैं कि अब तो काम हो ही गया है। अब कुछ हो तो सकता नहीं; फिर व्यर्थ ही समय खराब क्यों करता है ? अब तेरे पास जो भी समय शेष है; वह इन व्यर्थ की बातों में नष्ट करोगे तो खाना छूट जाएगा, तुम्हारे सभी कार्यक्रम गड़बड़ा जाएँगे। अब तुम आगे की सोचो।

इसप्रकार आचार्य समझाते हैं कि जिस बिन्दु पर पहुँचना चाहिए ह्न ऐसे वास्तविक बिन्दु पर पहुँचने के बाद भी हमारी जो भटकने की वृत्ति चालू रहती है, वह बहुत खतरनाक है; क्योंकि वह हमें फिर उसी चक्कर में डाल सकती है, जिस चक्कर से हम बड़ी मुश्किल से सुलझ कर आए हैं।

किसी ने कपड़ा खरीद लिया और दर्जी के यहाँ भी डाल दिया। अब वह एक दुकानदार से कहता है कि आपके यहाँ कोई अच्छा-सा कपड़ा हो तो दिखाना। दुकानदार तो समझ जाता है कि इसे कपड़ा तो खरीदना नहीं है, यह मात्र भाव पूछ रहा है। तब वह दुकानदार उसे १० रु. मीटर कम बता देता है। ८० रु. मीटर खरीदा हो तो उसे ७० रु. मीटर बता देता है। वह व्यक्ति वहाँ से भाव सुनकर जहाँ से कपड़ा खरीद लिया था; उस व्यक्ति के पास जाता है और उससे झगड़ा करने लगता है। तू-तू, मैं-मैं प्रारम्भ हो जाती है। वह कहता है कि आज तो मैंने यहाँ से कपड़ा खरीदा; अब भविष्य में मैं कभी यहाँ से कपड़ा नहीं खरीदूँगा। वे दोनों शत्रु बन जाते हैं।

यदि इस जीव को सच्चा मार्ग मिल गया है और जिनवाणी माता पर पूर्ण विश्वास है, कुन्कुन्दाचार्य तथा अमृतचन्द्राचार्य ने जो लिपिबद्ध किया है; उस पर यदि पूर्ण विश्वास है तो फिर अब शोध व खोज की प्रक्रिया का कुछ महत्त्व ही नहीं रहता है। यदि यह सच्चा मार्ग मिलने के उपरांत भी शोध व खोज की प्रक्रिया प्रारम्भ रखता है तो ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ उपदेश नहीं है। उसके भाग्य में भटकना ही है। **(क्रमश:)**

दिल्ली पंचकल्याणक की पत्रिका

दिल्ली पंचकल्याणक की पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश की 53 पाठशालाओं का निरीक्षण

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर सुलतानपुर द्वारा महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश की 53 पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। महाराष्ट्र के सोलापुर, अकलूज, नातेपुते, वालचन्दनगर, अन्थुर्णे, लासुर्णे, भिगवन, अक्कलकोट, रिसोड, अकोला, वाशिम, चिखली, बुलढाणा, फालेगाँव, मूर्तिजापुर, देवलगाँवराजा, हिंगोली, मोताला, ढोणगाँव, मालेगाँव, दहिगाँव, कुर्डूवाडी, इंदापुर, टेंभूर्णी, सदाशिवनगर, मालशिरस, बारामती, फलटण, सेनगाँव, हराल, शिरपुर जैन, मुंगला, वरुड (बु'), ढासाला, खामगाँव, नांदुरा, विहिगाँव, तुर्काबाद, बोधेगाँव, बालमटाकळी, देवलगाँव साकर्शा, तुर्काबाद आदि 45 स्थानों पर एवं मध्यप्रदेश के इन्दौर, विदिशा, गंजवासौदा, भोपाल, देहगाँव, सिलवानी, ओबेदुल्लाहगंज तथा बैरसिया ह्न इन 8 स्थानों पर पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न हुआ।

* पण्डितजी द्वारा सभी स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण करके उचित मार्गदर्शन दिये गये।
* प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।
* बन्द एवं निष्क्रिय पाठशालाओं को सक्रिय किया गया।
* जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के सदस्य बनाये गये।
* महाराष्ट्र में अनेक स्थानों पर नवीन पाठशालाओं का प्रारंभ हुआ ह्न सोलापुर में 3 स्थानों पर, मालशिरस, दहीगाँव, वालचन्दनगर, अन्थुर्णे, पानकनेरगाँव, लासूर्णे, अक्कलकोट, हराल, देवलगाँव साकर्शा, मूतिजापुर।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व भी आपके द्वारा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान की लगभग 60 पाठशालाओं का निरीक्षण किया जा चुका है।

गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठियों की शृंखला में शनिवार, दिनांक 1 जनवरी, 2005 को **छहढ़ाला : समयसार का एक रूप** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया; सभा की अध्यक्षता श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में कु. परिणति पाटील एवं बी. संतोष को पुरस्कृत किया गया। सभा का संचालन नवीन जैन ने तथा संयोजन विक्रान्त पाटनी ने किया।

रोल नम्बर एवं प्रश्नपत्र डिस्पेच

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर से सभी सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों को रोल नम्बर, टाईम टेबल, प्रश्न-पत्र आदि परीक्षा सामग्री प्रेषित की जा चुकी है; जिन केन्द्रों को 20 जनवरी, 05 तक भी परीक्षा सामग्री नहीं पहुँची हो ह्न वे तत्काल परीक्षा बोर्ड कार्यालय जयपुर को पत्र लिखकर या टेलीफोन करके मंगा लेवें। ज्ञातव्य है कि परीक्षाएँ 28, 29, 30 जनवरी, 2005 को रखी गई है। **ह्न प्रबन्धक, परीक्षा विभाग**

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 1 से 6 जनवरी, 05 तक श्री महावीर दि. जैन मंदिर में ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा दोनों समय पंचास्तिकाय ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकालीन बालकक्षा में पाठशाला के विद्यार्थियों को आपका मार्मिक उद्बोधन भी मिला।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 7 जनवरी,05 को बीना (म.प्र.) में भी पंचास्तिकाय पर आपका मार्मिक प्रवचन हुआ।

विमोचन एवं वेदी शिलान्यास सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र में दिनांक 9 जनवरी, 2005 को श्री दि. जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन श्री बाबूराम शीतलप्रसादजी जैन के करकमलों से सम्पन्न हुआ। झण्डारोहण श्री प्रेमकिशनजी जैन, नजफगढ़ ने किया।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. सुलेखचन्द जैन अमेरिका ने की। मुख्य अतिथि डॉ. साहिबसिंह वर्मा (भूतपूर्व केन्द्रीय श्रम मंत्री, भारत सरकार) थे। सभा का संचालन पण्डित संदीपजी शास्त्री ने किया।

इस प्रसंग पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित बाबूलालजी जैन, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री एवं पण्डित अमितजी शास्त्री का सान्निध्य मिला।

इस अवसर पर भगवान श्री भरतजी की वेदी का शिलान्यास श्री सुमतिकुमारजी सेठिया परिवार द्वारा एवं भगवान श्री बाहुबलीजी की वेदी का शिलान्यास श्री वैजयेन्द्र जैन परिवार द्वारा किया गया। अयोध्यानगरी में भूमिपूजन कर्त्ता श्री त्रिलोकचन्द जैन भारतनगर थे। प्रात: श्री सम्मेदशिखर विधान का आयोजन हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर ने सम्पन्न कराये। **– आदीश जैन**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जनवरी (द्वितीय) 2005
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127